काला बाज़ का उद्धार

एक साल, टेक्सास की सीमा पर रायोग्रान्डे के आसपास, एक निर्दय डाकू ने कुछ महीनों तक लोगों को बहुत परेशान किया। यह बदनाम डाकू देखने में विचित्र लगता था। उसके व्यक्तित्व ने उसके लिए, "सीमा का आतंक–काला बाज़" उपाधि अर्जित की थी। उसके और उसके दल के कारनामों की अनेक डरावनी कहानियाँ प्रचलित थीं। सहसा, एक पल में ही यह 'काला बाज़' पृथ्वी पर से गायब हो गया। दुबारा किसी ने चर्चा भी नहीं की। उसके अन्तर्धान होने के इस रहस्य का अनुमान उसके दल के सदस्य भी न लगा सके। सीमान्त प्रदेशों की बस्तियों और चरागाहों में यह आतंक फैला हुआ था कि वह फिर से आकर उन्हें लूटेगा और उनके लकड़ी के घरों को तहस–नहस कर देगा। पर ऐसा कभी नहीं होगा। यह कहानी उसके भाग्य का रहस्योद्घाटन करने के लिए ही लिखी गयी है।

कहानी का प्रारम्भिक मसाला सेंट लुई के एक कलाल ने दिया। एक बार उसकी पारखी दृष्टि, चिकन रगल्स पर पड़ी, जो मुफ्तखाने के दानों को लोभपूर्वक चुग रहा था। चिकन एक खानाबदोश था। उसकी नाक मुर्गे की चोंच सी थी, मुर्गे खाने की उसकी भूख असीम थी, और बिना दाम चुकाये, अपनी भूख मिटाने की उसकी आदत थी। साथी आवारों ने इन्हीं कारणों से उसे यह नाम दिया था।

डाक्टरों का कहना है कि खाने के समय शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। लेकिन मयखानों का स्वास्थ्य विज्ञान इससे बिल्कुल उल्टा ही है। चिकन आज खाने के साथ शराब का पैग खरीदना भूल गया था। कलाल अपने गल्ले से उठकर आया, नींबू निचोड़ने के औजार से इस मूर्ख भोजनभट्ट का कान पकड़ा और उसे दरवाज़े से बाहर सड़क पर धकेल दिया।

इस प्रकार, चिकन के दिमाग में आनेवाली सर्दियों की विभीषिका का अहसास हो गया। रात ठंडी थी, तारे करुणाहीन चमक से जगमगा रहे थे,

सड़कों पर आदमियों की, दो अहंकारपूर्ण, धक्कामुक्की करती हुई धाराएँ शीघ्रता से चली जा रही थीं। लोगों ने अपने ओवरकोट धारण कर लिये थे और उनके नीचे के कपड़ों की अन्दरवाली जेबों से पैसे निकलवाने में कितनी कठिनाई होती है, इसे चिकन बहुत अच्छी तरह जानता था। हर वर्ष की तरह दक्षिण की ओर प्रयाण करने का समय आ चुका था।

पाँच या छः साल का एक नन्हा सा लड़का, एक हलवाई की दुकान की खिड़की की ओर ललचाई नजरों से देख रहा था। उसके एक हाथ में दो औंस की खाली शीशी थी और दूसरे में उसने कुछ चीज़ जोर से भींच रखी थी, जो चपटी और गोल होती है, तथा जिसके किनारे पर चूड़ी बनी हुई होती है। चिकन को यह दृश्य अपनी योग्यता और साहस प्रदर्शन का उपयुक्त क्षेत्र दिखाई दिया। क्षितिज तक नजर दौड़ा कर, उसने ठीक तरह इस बात की जाँच कर ली कि कोई सरकारी आदमी तो आस-पास नहीं है, और फिर उसने अपने शिकार से छलपूर्वक, दुआ सलाम शुरू की। लड़के ने इस वार्तालाप की कोई परवाह नहीं की क्योंकि उसे बचपन से ही ऐसी परोपकारी मनुहारों पर सन्देह करने की शिक्षा घरवालों द्वारा मिल चुकी थी।

चिकन समझ गया कि अब उसे साहस के साथ ऐसा प्रचण्ड दाँव खेलना पड़ेगा जिसकी भाग्य भी अपने अभिभावकों से आकांक्षा रखता है। उसकी कुल पूंजी पांच सैंट थी। और यदि वह उस चीज़ को जीतना चाहता है जो उस लड़के की मुट्ठी में भिंची हुई है तो उसे अपनी कुल पूंजी की जोखम उठानी पड़ेगी। चिकन जानता था कि यह एक अनिश्चित लाटरी है। उसे कोई तरकीब लगाकर अपने ध्येय की सिद्धि करना चाहिये, क्योंकि बच्चों को जबरदस्ती लूटने से उसे एकदम डर लगता था। एक बार एक बगीचे में भूखे मरते हुए उसने एक बच्चे के हाथ में की, दूध की बोतल पर हमला कर दिया था। क्रुद्ध बालक ने इतनी जल्दी मुँह फाड़कर अपनी नाराजी प्रकट की, कि न जाने कहाँ से सहायता आ पहुँची और उसे तीस दिन आराम से जेल काटनी पड़ी। उसी दिन से, उसी की जबानी वह "बच्चों से डरता था"।

बच्चे को उसकी मिठाइयों की पसन्द के बारे में कलात्मक ढंग से पूछना शुरू करके, धीरे धीरे उसने उससे सारी आवश्यक जानकरी हासिल कर ली। उसकी माँ ने उसे समझाकर भेजा था कि वह पहले दवाई के दुकानदार से

दस सेंट की दर्द की दवा बोतल मे डलवाये , अपने डालर को बन्द मुट्ठी मे भींच कर रखे, रास्ते मे किसी से बात करने के लिए न रुके, और दुकानदार से कहे कि वह बाकी की रेजगारी लपेट कर उसके पैंट की जेब मे डाल दे । वास्तव मे उसके दो जेबें थी और उसे चाकलेट क्रीम सबसे ज्यादा पसन्द थी।

चिकन स्टोर मे गया और सटोरिया बन गया। आनेवाली बडी जोखिम की तैयारी मे अपनी सारी पूजी उसने मिठाई के शेयरो पर लगा दी।

उसने बच्चे को कुछ मिठाइयाँ दी और उसमे विश्वास का सचार होते देखकर उसे सन्तोष हुआ। इसके बाद अभियान का नेतृत्व सम्हालना आसान था , सिर्फ अपने विनियोग का हाथ पकड कर कुछ दूरी पर अपनी जानपहिचान वाली दवाइयो की दुकान तक ले जाना था । वहाँ चिकन ने एक अभिभावक की हैसियत से डालर तो अपने हाथ मे सम्हाला और दवाई माँगी। खरीददारी के उत्तरदायित्व से मुक्त होकर, लडका खुशी खुशी अपनी कैंडी चूसने लगा। और तब उस सफल सौदागर ने अपनी जेबो को टटोला, जिसमे उसे सर्दी के कपडो की यादगार के रूप ओवरकोट का एक बडा बटन मिल गया। उसे उसी प्रकार सावधानी से लपेट कर उसने यह जाली रेजगारी उस विश्वास करने वाले लडके की जेब मे डाल दी। लडके का मुँह घर की ओर कर के, कृपापूर्वक उसकी पीठ थपथपाकर (क्योंकि चिकन का हृदय मुर्गे की तरह ही डरपोक था) और अपनी लागत पर १,७०० प्रतिशत लाभ उठाकर, वह सटोरिया बाजार से निकल गया।

दो घण्टे बाद, आयरन माउन्टेन की मालगाडी का इजन, खाली डिब्बे लिये हुए अपने कारखाने से टैक्सास की तरफ रवाना हुआ। एक मवेशी डिब्बे मे, घास के ढेर पर चिकन आराम से लेट गया। इस घोसले मे उसके पास कुछ घटिया शराब और एक थैली मे रोटी और पनीर पडा था। अपनी व्यक्तिगत गाडी में श्रीमान चिकन रगल्स, सर्दियाँ बिताने के लिए दक्षिण की यात्रा कर रहे थे।

एक सप्ताह तक वह गाड़ी रुकती हुई, बदलती हुई, और मालगाडियो की तरह बढ़ती, घटती हुई, दक्षिण की तरफ लुढकती रही। लेकिन चिकन, भूख-प्यास लगने के अवसरो के सिवाय, उसीसे चिपका रहा। वह जानता था कि गाडी निश्चित रूप से उसकी मजिल – सान अएटोनियो – तक जायगी। वहाँ पर हवा मंद और स्वास्थ्यकर होगी, वहाँ के लोग दयालु और मुक्तभोगी। वहाँ के

कलाल उसे ठोकर नहीं मारेंगे। यदि वह एक ही जगह पर बारबार बिना पैसे दिये खा भी लेगा, तो उसे रटे हुए शब्दो में, बिना क्रोध दिखाये, गालियाँ ही देंगे। और उनका गालियाँ देने का ढँग भी बड़ा दिलचस्प होता है, जिसमें वे लम्बा-चौड़ा शब्दकोष खाली कर देते हैं। और जब तक वे उसकी भर्त्सना करेंगे, चिकन अपना खाना समाप्त कर लेगा। वहाँ का मौसम सदाबहार, वहाँ की रातें सदासुहागिन ! और यदि घरों में आवभगत न होती हो, तो सर्दी के कुछ इनेगिने दिनों को छोड़कर, खुले में आदमी बड़े आराम से सो सकता है।

टैक्सरखाना पहुँचकर उसका डिब्बा एक और गाड़ी से जोड़ दिया गया। गाड़ी बराबर दक्षिण की ओर बढ़ती रही और कोलोरेडो का पुल पार करके आस्टिन पहुँची, जहाँ से एक शाखा तीर की तरह सीधी सान अएटोनियो जाती थी।

लेकिन मालगाड़ी जब सान अएटोनियो पहुँची, तब चिकन सो रहा था। दस मिनट बाद गाड़ी लारेडो के लिए रवाना हो गयी जो उस लाइन का अन्तिम स्टेशन था। मवेशियों के ये खाली डिब्बे इसी दरम्यान अलग अलग गोचरों में मवेशी लादने के लिए बँटने वाले थे।

चिकन की आँख खुली तब गाड़ी खड़ी थी। दरारों से देखने पर उसे बाहर चाँदनी दिखाई दी। रेंगते हुए बाहर आकर उसने देखा कि उसका डिब्बा तीन अन्य डिब्बों के साथ निर्जन जंगल के एक ओर खड़ा है। रेल के एक किनारे, मवेशियों का एक बाड़ा है और उन्हे गाड़ी में लादने का यंत्र भी वहीं पड़ा है। रेल की पटरी के चारों ओर, सूखा, सुनसान मैदान समुद्र की तरह फैला हुआ है। चिकन को महसूस हुआ कि इस वीराने में वह अकेला, राबिनसन क्रूसो की तरह भटक गया है।

पटरी के पास ही एक सफेद खम्भा था। पास जाकर चिकन ने पढ़ा, "सान अएटेनियो ९० मील" लारेडो भी दक्षिण की ओर उतनी ही दूरी पर था। किसी भी शहर से वह इस समय लगभग सौ मील दूर था। उस रहस्यपूर्ण निर्जन से जानवारों की चीखें सुनाई दे रही थीं। चिकन को अकेलापन महसूस हुआ। वैसे तो वह बोस्टन में रहा और पढ़ा नहीं, शिकागो में रहा और डरा नहीं, फिलाडेलफिया में रहा और सोने की जगह नहीं खोजी, न्यूयार्क में रहा और आसरा नहीं पाया, और पिट्सबर्ग में रहकर शराब में अपनी हस्ती को नहीं डुबाया, परन्तु आज के जैसा अकेलापन उसने कभी महसूस नहीं किया।

एकाएक उस गहन नीरवता में उसे घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। आवाज़ पूरब की ओर से आ रही थी। चिकन ने सावधानी से उसी दिशा में खोज आरम्भ की। ऊँची ऊँची घास से वह बचकर चला क्योंकि इस बीहड़ में ऐसी कई चीजें हो सकती हैं जिनसे वह डरता था – जैसे साँप, चूहे, डाकू, कनखजूरे, मरीचिका, गडरिये, जंगली भील, केंकड़े या और कोई बला। उसने कहानियों में इन चीजों के सम्बन्ध में बहुत पढ़ रखा था। अपने गोल गोल शिरों को उठाये, डरावने ढंग से फैली हुई, नागफनी के झुण्ड, के उस तरफ जाते ही वह डर से काँप उठा। एक घोड़ा उसके आने से चौकन्ना होकर उछला और नथनें फुलाता हुआ कोई पचास गज भागकर फिर चरने लगा। इस वीराने में यही एक ऐसी चीज़ थी जिससे चिकन डरता नहीं था। वह खेतों में ही छोटे से बड़ा हुआ था और बचपन से ही घोड़ों को सम्हालना, दौड़ाना और समझना सीख गया था।

धीरे धीरे घोड़े को पुचकारता हुआ वह आगे बढ़ा। एक बार डर कर घोड़ा शान्त हो गया था और चिकन ने धीरे धीरे आगे बढ़कर डोरी का फन्दा डाल कर उसे पकड़ लिया। कुछ ही देर में उसने मैक्सिकन बनजारों की तरह उसी डोरी की कामचलाऊ लगाम बना ली। दूसरे ही क्षण वह घोड़े के ऊपर बैठा सरपट आगे बढ़ा जा रहा था। 'यह मुझे कहीं न कहीं तो पहुँचा ही देगा'– यह सोचकर उसने मंज़िल और दिशा घोड़े की इच्छा पर छोड़ दी।

इस चाँदनी रात में खुले मैदान पर घोड़े को स्वच्छन्द दौड़ाना, चिकन जैसे कामचोर और आलसी मनुष्य के लिए भी आनन्द की बात हो सकती थी। परन्तु इस समय उसकी इच्छा नहीं थी। उसका सिर चकरा रहा था, प्यास से गला सूख रहा था और जिस किसी अनिश्चित स्थान में उसका घोड़ा उसे ले जा रहा था, उसकी एक धुँधली सी आशंका उसे परेशान कर रही थी।

उसने देखा कि घोड़ा एक निश्चित मंजिल की तरफ बढ़ रहा था। जहाँ समतल मैदान होता वहाँ वह तीर की तरह पूरब की ओर भागता और जहाँ रास्ता पहाड़ियों, सूखे नालों या दुर्गम घाटियों से असम हो जाता, वहाँ भी वह अपने किसी सहज ज्ञान से प्रेरित उसी दिशा में अग्रसर हो रहा था। अन्त में एक छोटी सी पहाड़ी के किनारे घोड़े ने अपनी चाल धीमी कर दी। कुछ ही दूर, पेड़ों का एक झुरमुट आया जिसके नीचे मैक्सिको निवासियों के रहने जैसी

एक घुमटी थी—एक कमरे का छोटा-सा घर, बांस पर मिट्टी थोप कर बनायी हुई कची दीवारें और फूस का छप्पर। अनुभवी आँखों ने इसे फौरन किसी छोटी-सी चरागाह के मालिक के निवासस्थान के रूप में पहचान लिया होता। चाँदनी में नजदीक के बाड़े की जमीन भेड़ों के खुरों द्वारा कूट-पीस कर समतल बना दी गयी थी। सभी ओर चरागाहों का तामझाम बिखरा पड़ा था, जैसे रस्सियाँ, लगामें, जीन, भेड़ों की खालें, ऊन के बोरे, नाँद और तम्बू ठोकने का कबाड़ा। दरवाजे के पास दो घोड़ों की बग्घी खड़ी थी। वहीं पीने के पानी का पीपा रखा था। बग्घी की धुरा पर घोड़ों के कई साज अस्तव्यस्त पड़े ओस में भींग रहे थे।

नीचे उतर कर चिकन ने घोड़े को एक पेड़ से बाँध दिया। बार बार पुकारने पर भी उसे कोई उत्तर नहीं मिला। दरवाज़ा खुला ही था, वह सावधानी से अन्दर घुसा। धुँधली रोशनी में भी उसने देख लिया कि घर में कोई नहीं हैं। उसने दियासलाई से टेबल पर पड़ी लालटेन को जलाया। कमरा किसी अविवाहित चरवाहे का मालूम देता था जिसे सिर्फ आवश्यक वस्तुओं के संग्रह से ही सन्तोष था। चिकन ने सतर्कता से कमरे को छानना शुरू किया और उसकी कल्पना से भी परे एक चीज़, एक छोटी सी भूरी सुराही उसके हाथ लगी, जिसमें अब भी उसकी तमन्ना से भरा, एक जाम बचा था।

करीब आधे घण्टे बाद लड़ाकू मुर्गे की तरह खूँखार होकर चिकन लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। इस दरम्यान उसने अपने फटे-पुराने चिथड़ों के स्थान पर मकान-मालिक के कपड़ों पर अधिकार जमा लिया था। वह भूरी जीन का मोटा सूट पहिने हुए था जिसका कोट छैलबटाऊ-सा भड़कीला था। वह भारी जूते पहने था, जिसकी एड़ उसके हर कदम के साथ चरमराती थी। उसकी कमर में कारतूसों से भरा चमड़े का एक पट्टा कसा हुआ था, जिसके दोनों ओर दो तमंचे लटक रहे थे।

इधर उधर टटोल कर उसने कुछ कम्बल, एक जीन और एक लगाम भी ढूँढ़ ली और इनसे अपने घोड़े को कसा। जोर से एक बेसुरा गीत आलापता हुआ, वह घोड़े पर बैठकर जल्दी से आगे बढ़ गया।

'बड किंग' की डाकुओं, लुटेरों और उठाईगीरों की टोली नज़दीक में ही फ्रायो नदी के किनारे एकान्त में डेरा डाले हुए थी। रायो ग्राण्डे के इस इलाके में उनकी करतूतों से आतंक छाया हुआ था, जिससे कैप्टन किन्नी

को अपने साथियो की मदद से उनकी खबर लेने का हुक्म मिल चुका था। इसीलिये बड किग ने, जो एक अनुभवी और समझदार नायक था, अपने साथियो की राय को ठुकरा कर भी कानून के इन हिमायतियो के पजे मे फँसने के बजाय, कुछ समय के लिए फ्रायो घाटी के इस बीहड मे अवकाश ले लेना ही उचित समझा था।

हालाँकि यह कदम समझदारी का था और बड किग की प्रसिद्धि या बहादुरी पर इससे कोई धब्बा नही लगता था, फिर भी उसके साथियो मे असतोष की एक लहर फैल गयी। दरअसल इस निर्जन मे अपयश के साथ चुपचाप पडे हुए वे लोग गुपचुप बड किग के नेतृत्व की योग्यता पर वादविवाद करने लगे थे। इससे पहले कभी बड की बुद्धिमत्ता और कार्यक्षमता की आलोचना किसी ने नही की थी। परन्तु अब एक नवोदित तारे के प्रकाश मे उसके यश का सूर्य फीका पड रहा था। (यश का यही दुर्भाग्य होता है।) दल की भावना एक ही विचार में केन्द्रित हो रही थी कि काला बाज उनका नेतृत्व अधिक जीवट, लाभ और योग्यता से कर सकता है।

यह 'काला बाज'—उपनाम 'सीमा का आतक'—कोई तीन महीने हुए, दल का सदस्य बना था।

एक रात जब वे लोग सान मीगल तालाब के किनारे डेरा डाले हुए पडे थे, एक आबदार, फौजी, घोडे पर बैठा हुआ कोई एकाकी घुडसवार उनसे आ मिला। नवागन्तुक का डीलडौल लम्बा, चौडा और अपशकुन-सूचक था। चोच की सी नाक, जिसका नुकीला भाग घनी काली मूछो के ऊपर उठा हुआ, डरावनी गहरी आँखे, हैट बूट से लैस, तमचो से जडा हुआ, नशे मे चूर, निर्भयता की साक्षात मूर्ति! बड किग के डेरे मे इस तरह बेधडक घुस आने की हिम्मत रायो की घाटी मे रहने वाले कम ही लोगो ने की होगी। परन्तु यह तो शिकारी बाज की तरह घुस आया और भोजन कराने की माँग करने लगा!

मैदानो के उस उपजाऊ प्रदेश मे आतिथ्य की कमी नही। यदि आपका दुश्मन भी आपके दरवाज़े से होकर गुजरे तो आपका फर्ज है कि गोली से उड़ाने से पहले उसकी पेट पूजा करे। उसके शरीर को बन्दूक की गोलियों से भरने से पहले उसके पेट को भण्डार की उत्तम चीजों से भरना जरूरी है। इसलिए अज्ञात कारण से आये हुए इस अजनबी के सम्मान मे

एक शानदार दावत की गयी। वह बड़ा बातूनी था। अपने कारनामों की उसने शानदार गप्पें हाँकीं। कभी कभी उसकी भाषा समझ में नहीं भी आती, पर बात का रंग जमा रहता। इस कैंडे के आदमियों से अनजान, बड किंग के साथियों में उसने सनसनी फैला दी। उसकी दूर की सूझ, लच्छेदार भाषा, जीवन का लापरवाह दृष्टिकोण, इस दुनिया और आनेवाली दुनियाँ के प्रति उदासीनता और मन की बात को निशंक होकर कहने का ढंग—इन सब बातों ने दल के सदस्यों को उसका बिना मोल का गुलाम बना दिया।

आगन्तुक के लिए, लुटेरों का वह दल, मूर्ख किसानों के समूह से अधिक कुछ नहीं था। जिस तरह किसी खेत में बैठे बैठे उन्हें गप्पें सुनाकर वह अपना पेट भर लेता था उसी तरह आज डाकुओं के दल को फँसा बैठा। और सचमुच उसके अज्ञान का एक और कारण भी था। प्रदेश के लुटेरे एकदम बुरे नहीं होते। डाकुओं का वह दल किसी अजनबी को निरीह, गँवार किसानों का समूह लग सकता था, जो बैठे बैठे भुट्टे भून रहे हों। नम्र व्यवहार, धीमी चाल, मन्द स्वर, सादे कपड़े—उनके काले कारनामों का एक भी चिन्ह सामान्य दर्शक को दिखाई नहीं देता था।

इस दिलचस्प मेहमान का दो रोज तक शानदार स्वागत हुआ। फिर एक मत से उसे दल का सदस्य बनने का निमंत्रण दिया गया। उसने अपनी सहमति व्यक्त की और 'कप्तान मॉंट्रेसर' के शानदार नाम से दर्ज होने की इच्छा भी; परन्तु इस सुझाव का तुरन्त विरोध हुआ और उसकी कभी न बुझने वाली भूख को नजर में रखते हुए 'बकासुर' की उपाधि प्रदान की गयी।

इस तरह टैक्सास के सीमान्त प्रदेश में वहाँ के सबसे दर्शनीय डाकू का जन्म हुआ।

इसके बाद तीन महीने तक बड किंग अपना काम करता रहा—सिपाहियों से मुठभेड़ यथासम्भव टालना और मौका लगते ही जो कुछ मिले उसमें सन्तोष मानकर रफू हो जाना। दल ने समीप की चरागाहों के कई सुन्दर घोड़े और मवेशियों के कई रेवड़ उड़ाये, जिन्हें रायो घाटी के उस पार अच्छे दामों में बेच दिया गया। कभी कभी दल छोटे छोटे गाँवों या मैक्सिकन लोगों की बस्तियों पर धावा बोल देता और उन गरीब बनजारों को डरा धमका कर खाने पीने की चीजें और बारूद, कारतूस जैसी आवश्यक चीजें लूट कर ले जाता। इस प्रकार के रक्तहीन धावों

के दौरान में ही 'बकासुर' के भयानक डीलडौल और डरावनी आवाज़ ने उसके लिए एक ऐसी शानदार और व्यापक प्रसिद्धि अर्जित कर ली जो दल के मधुभाषी, रोनी सूरत वाले लुटेरों के लिए जीवन भर में भी कमानी संभव नहीं थी।

नामकरण करने में प्रवीण मैक्सिकन लोगों ने ही पहले पहल उसका नाम 'काला बाज़' रखा था। उस नाम से वे बच्चों को डराया करते थे कि यह भयानक लुटेरा अपनी चोंच में छोटे बच्चों को उठाकर ले जाता है। कुछ ही दिनों में यह 'काला बाज़' सीमा का आतंक नाम से प्रसिद्ध हो गया और अखबारों की अतिशयोक्तिपूर्ण खबरें और गडरियों की गपशप में प्रचलित हो गया।

न्यूसीस से लगा कर रायो ग्रारड तक का प्रदेश बीहड़, पर उपजाऊ था; भेड़—बकरी चराने के बड़े बड़े चरागाहों की जमीन की कोई कीमत नहीं थी, आबादी बहुत कम थी, कानून विशेषकर किताबों तक ही सीमित था और डाकुओं को बहुत कम विरोध का मुकाबला करना पड़ता था; पर इस भड़कीले और आकर्षक 'बकासुर' के आगमन के बाद दल काफी कुप्रसिद्ध हो गया था। तब किन्नी और उनके साथियों ने इसी प्रदेश में डेरा जमाया। बड किंग ने निश्चय किया कि अब दो ही विकल्प हैं— या तो खूँखार लड़ाई या कुछ समय के लिए सन्यास। लड़ाई की जोखम उठाना इस समय अनावश्यक समझ कर वह अपने दल को फ्रायो के एक दुर्गम दर्रे में ले गया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसी बात को लेकर दल के सदस्यों में असन्तोष की आग भड़क उठी और बड के खिलाफ कार्यवाही करने का निश्चय किया गया। उत्तराधिकारी के रूप में काला बाज़ ही लोकप्रिय था। बड किंग अपने साथियों की भावना से अनभिज्ञ नहीं था, इसलिए उसने अपने विश्वस्त सेनानी, कैक्टस टेलर को सलाह मशविरे के लिए बुलाया।

बड बोला, "अगर वे लोग मुझसे सन्तुष्ट नहीं हैं तो मैं पदत्याग करने को तैयार हूँ। मेरे काम करने के ढंग से वे सन्तुष्ट नहीं हैं। विशेष कारण यह हुआ कि जब तक सेम किन्नी इस इलाके में मौजूद है, मैंने चुप रहना ही उचित समझा है। मैंने तो उन्हें गोली का शिकार बनने या सरकारी महमान बनने से बचाया और वे कहते हैं कि मैं निकम्मा हूँ।"

कैक्टस ने उत्तर दिया, "असली कारण यह नहीं है। असल में वे लोग 'बकासुर' से बहुत प्रभावित हुए हैं और चाहते हैं कि अपनी शानदार मूँछों और चोंचनुमा नाक लिये वही उनके कारवाँ का रहबर हो।"

बड ने विचार करते हुए कहा, "'बकासुर' के बारे में कुछ विचित्र बात तो जरूर है। उसके मुकाबले का कोई आदमी ही अब तक मैंने नहीं देखा। बेशक, वह चिल्लाता बहुत जोर से है और उसकी जोड़ का घुड़सवार भी मिलना मुश्किल है, पर उसे अभी आजमाया नहीं जा सका। तुम जानते हो कैक्टस, कि उसके आने के बाद अपने दल का अभी तक किसी से संघर्ष ही नहीं हुआ। मैक्सिकन गँवारों को डराने में या छोटी मोटी दुकानों को लूटने में 'बकासुर' सिद्धहस्त है। यह भी माना कि मक्खन के डिब्बे लूटने में और आयस्टर के टीन उड़ाने में भी वह पारंगत है। पर इससे उसकी लड़ाई की उमंग का पता नहीं चलता। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो गप्पें तो बहुत लम्बी चौड़ी हाँकते हैं पर गोली की पहली बौछार बरसते ही उनके पेट में दर्द होने लगता है।"

कैक्टस बोला, "बातें तो वह बड़ी बड़ी करता है और कई लड़ाइयों का वर्णन भी सुनाता है। कहता है कि उसने हाथी की नानी को देखा है और उल्लू की मौसी को सुना है।"

बड किंग ने डाकुओं की साँकेतिक भाषा में शंका व्यक्त की, "मुझे तो ढोल में पोल दिखाई देती है।"

यह बातचीत एक रात को खेमे में बैठकर हुई थी जब कि दल के अन्य आठों सदस्य धूनी के चारों ओर पड़े आराम से खाना खा रहे थे। बड और कैक्टस का वार्तालाप समाप्त होते ही 'बकासुर' की डरावनी आवाज़ सुनाई दी जो सदा की तरह अपनी भेड़िये सी भूख का थोड़ा बहुत निवारण करने में लगा हुआ था क्योंकि उसकी सम्पूर्ण तुष्टि तो संभव ही नहीं थी।

वह कह रहा था, "इन गाय के बछड़ों और घोड़ों का हजारों मील पीछा करने से क्या फायदा। इसमें क्या रखा है? झाड़-झंखाड़ों में दिन भर भटक भटक कर ऐसी प्यास लगती है जिसे पूरा मयखाना भी नहीं बुझा सकता। और, खाना छूट जाता है सो अलग। अगर मैं इस दल का मुखिया होऊँ तो क्या करूँ — मालूम है? मैं तो किसी रेलगाड़ी को लूटूँ – किसी डाकगाड़ी पर ही हाथ साफ करूँ ताकि नगद नारायण तो हाथ लगे। इस तरह धूल फाँकने से क्या फायदा? मैं तो

अब थक गया हूँ। गाय घोडे चराने के इस घटिया खेल से मुझे नफरत हो गयी है।"

बाद मे दल के प्रतिनिधि बड से मिले। एक पॉव पर खडे खडे दाँतो से घास चबाते हुए वे इधर उधर की उद्देश्यहीन बाते करने लगे क्योकि अपने नेता की भावना को ठेस लगाने मे उन्हे दुख हो रहा था। बड उनके आने का कारण जानता था। वे अधिक खतरा और अधिक लाभ चाहते थे। बड ने उनका काम आसान कर दिया।

रेलगाडी लूटने की 'बकासुर' की योजना ने उनके मन मे नयी शक्ति का सचार करके उसके सयोजक के साहस और हिम्मत के प्रति और भी अधिक श्रद्धा उत्पन्न कर दी थी। स्वभाव से वे लोग इतने सीधे-सादे, निच्छल और रूढिग्रस्त थे कि इससे पहिले कभी, मवेशी चुराने और उनके काम मे टॉग अडाने वालो को मौत क घाट उतारने के सिवाय उन्होने अपने व्यापार का क्षेत्र बढाया ही नही था।

बड ने उदारतापूर्वक इस अभियान मे सहायक का स्थान स्वीकार कर लिया ताकि काला बाज अपने नेतृत्व की योग्यता प्रमाणित कर सके।

रेल के टाइमटेबलो का अध्ययन, उस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति और अन्य कई बातों के सोच-विचार के बाद नयी योजना कार्यान्वित करने का दिन, समय और स्थान तय किया गया। उन दिनो मैक्सिको में चारे का अकाल पड़ रहा था और अमरीका मे मवेशियो की कमी। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जोरो पर था। और दोनो देशो के बीच काफी धन रेल द्वारा ले जाया जाता था। यह निश्चित हुआ कि इस डाके के लिए लारेडो से चालीस मील उत्तर की ओर स्थित आई जी एन रेल्वे का एस्पीना नामक छोटा-सा स्टेशन सब से उपयुक्त रहेगा। गाडी वहॉ सिर्फ एक मिनट रुकती थी। चारो तरफ का प्रदेश उजाड और निर्जन था और स्टेशन पर सिर्फ एक ही मकान था जिसमे स्टेशन मास्टर रहता था।

घोडो पर बैठ कर काले बाज का दल, रात मे ही निकल पडा। पूरा दिन उन्होंने एस्पीना के समीप की झाड़ियो मे घोडों को सुस्ताया।

एस्पीना में गाडी रात को साढे दस बजे आती थी। गाडी लूट कर दूसरे दिन भोर होते होते वे लोग राजी खुशी मैक्सिको की सीमा पार कर सकते थे।

ईनामदारी से कहें तो काला बाज़ ने अपनी माननीय जिम्मेदारी से झिझकने का कोई लक्षण प्रकट नहीं किया ।

बहुत समझदारी के साथ उसने अपने दल के लोगों में काम का विभाजन किया और अपना अपना कर्तव्य निभाने की उन्हें तालीम दी। पटरी के दोनों तरफ दल के चार चार लोग झाड़ी में छुपे रहेंगे। कनकटा रोजर स्टेशन मास्टर को सम्हालेगा। ब्रोंको चार्ली घोड़ों को तैयार रखेगा। इंजिन के खड़े रहने के सम्भावित स्थान पर एक ओर बड किंग और दूसरी ओर स्वयं काला बाज़ छुप कर बैठेंगे। गाड़ी रुकते ही डाइवर और खलासी पर हमला करके वे दोनों उन्हें नीचे उतारकर पीछे की ओर जाने को मजबूर करेंगे। इसके बाद डाकगाड़ी को लूटकर पलायन किया जायगा। जब तक कालाबाज़ अपना तमंचा चला कर इशारा न दे, तब तक कोई भी अपनी जगह से हिलेगा नहीं। योजना परिपूर्ण थी।

गाड़ी आने से दस मिनट पहिले हर आदमी अपनी अपनी जगह पर मुस्तैद हो गया। पटरियों तक वनी उगी हुई घास ने उन्हें पूरी तरह ढक लिया था। रात काली थी और बदली रिमझिम बरस रही थी। काला बाज़ पटरी से कोई पाँच गज दूर एक झाड़ी के पीछे छिपा बैठा था। उसके दोनों ओर छः छः कारतूसों वाली दो पिस्तौलें बँधी हुई थी। कभी कभी वह अपनी जेब से एक छोटी-सी काली बोतल निकाल कर मुँह से लगा लेता था।

पटरी पर काफी दूर एक मद्धम तारा दिखाई दिया जो थोड़ी ही देर में आनेवाली गाड़ी की हैड लाइट में परिवर्तित हो गया। गाड़ी घड़घड़ाती हुई आयी। छिपे हुए लुटेरों को प्रकाश में डुबोता हुआ इंजिन आगे बढ़ गया, मानों उन्हें सज़ा देने के लिए कोई यमदूत आया हो। काला बाज़ जमीन से चिपक गया। उनके अन्दाज के खिलाफ, इंजन काला बाज़ और बड किंग के छिपने की जगह के पास रुकने की बजाय कोई चालीस गज़ आगे जाकर रुका।

डाकुओं का सरदार उठ खड़ा हुआ और झाड़ी से इधर उधर झाँकने लगा। उसके साथी, इशारे की राह देखते हुए चुपचाप पड़े थे। काला बाज़ के ठीक सामने जो चीज़ आ खड़ी हुई उसने तुरन्त उसका ध्यान आकर्षित किया। यह डाक गाड़ी न होकर मिलीजुली गाड़ी थी। उसके सामने एक मवेशियों का डिब्बा आ खड़ा हुआ जिसका दरवाज़ा गलती से कुछ खुला रह

गया था। अन्दर से आनेवाली भीनी, परिचित, घुटी हुई, नशीली और प्रिय सड़े हुए तेल की सी दुर्गन्ध ने उसके मन में बीते हुये सुखी दिनों और यात्राओं की याद ताज़ा कर दी।

इस मोहक सुगन्ध को काला बाज़ वैसी तल्लीनता से सूँघता रहा जैसे कोई घुमक्कड़ स्वदेश लौट कर गुलाब के फूलों से छायी अपनी झोंपड़ी को सूँघता है। घर की याद ने उसे पागल कर दिया। उसने रेल के डिब्बे में हाथ डाला। फर्श पर सूखी, गुदगुदी, घुंघराली, नरम, आकर्षक, घास बिछी हुई थी। बाहर, रिमझिम का स्थान हड्डियाँ कँपा देनेवाली वर्षा ने ले लिया था।

गाड़ी की घण्टी बजी। डाकुओं के सरदार ने कमर से पट्टा खोला और तमंचों के समेत उसे जमीन पर फेंक दिया। भारी जूतों और चौड़े टोप की भी वही दशा हुई। काला बाज़ का रूपान्तर हो गया। गाड़ी रवाना होते ही एक झटके के साथ भूतपूर्व 'सीमा के आतंक' ने कूद कर डिब्बे में चढ़ते हुए दरवाज़ा बन्द कर लिया। घास पर आराम से लेटे हुए काली बोतल सीने से लगाये, आँखें बन्द किये और अपने डरावने चेहरे पर मूर्खतापूर्ण, पर सुखद मुस्कराहट लिये चिकन रगल्स ने अपनी वापसी यात्रा आरम्भ की।

डाकुओं का दल अपने नेता के इशारे की प्रतीक्षा में निस्पन्द पड़ा रहा और रेलगाड़ी बेखटक एस्पीना से चल दी। जैसे जैसे गाड़ी की रफ्तार बढ़ती गयी और ऊंची घास के काले झुरमुट पीछे सरकते गये, गाड़ी के हरकारे ने अपना पाइप सुलगा कर खिड़की से बाहर देखते हुए टिप्पणी की—

"वाह, डाका डालने के लिए क्या ही बढ़िया स्थान है!"